बीजिंग में निक्सन का स्वागत जायज नही. हम इसका समर्थन नहीं करते.

अनवर हुजा

चीन की सीपी के सीसी को पत्र.

अगस्त 6, 1971.

चीन की कम्युनिष्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी
कॉमरेड माओ त्सेतुंग
बीजिंग

प्रिय कॉमरेड

निक्सन की होने वाली चीन की यात्रा के संबध में झाउ एन लाइ द्वारा हमारे बीजिंग के राजदूत जरीए भेजी गई सूचना के लिए हमारी पार्टी का नेतृत्व अपका शुक्रिया अदा करता है.

तिराअना की खास यात्रा पर आएं कॉमरेड झोर्झी रोबो ने हमे निक्सन की होने वाली यात्रा को लेकर चीनी नेतृत्व के मुल्याकंन के बारे में, अंतर्राष्ट्रीय हालात और अमेरीका के अन्दरुनी हालात के बारे में, और कॉमरेड झाउ एन लाइ के साथ किस्सींगर की बैठक में उठाए गए सवाल और उस पर चीनी पक्ष के नजरीए के बारे में जो बात-चीत कॉमरेड झाउ एन लाई और उनके बीच हुई थी, की विस्तृत जानकारी दी.

हमारे राजदूत ने हमे बताया कि, आपकी सूचना के मुताबिक, निक्सन दो सालों से चीन की यात्रा पर आने की बात कह रहें थें और इस यात्रा का प्रबंध करने के लिए कई स्तरो पर संपर्क बनाया गया. आपके द्वारा निक्सन की बात-चीत को वर्सावा में पहले हो चूकी बात-चीत को बढाने वाले कदम के रुप मे बतलाया गया है. हमारे राजदुत ने आपके मुल्याकंन को कि हाल के सालों मे अमेरिका के हालात में तेजी से बदलाव आया है, कि अमेरिका इंकलावी तुफान के मुहाने पर खडा है और कि अमेरिका मुश्किल हालात मे है, कि वे जंग को जारी नही रख सकते, तनावग्रस्त हालात का खात्मा, जंग में शामिल होने से और जंग के नए केन्द्र बनाने से बचने के क्रम में विदेशी जमीन से अपनी सेना की वापसी और अपने सैन्य आधारों का खात्मा चाहतें हैं, और अपने कठपुतलीयों की केवल पैसे और हथियारों से मदद कर रहें है ताकि ऐशियाई एशियाई से लड़ते रहें. हमारे राजदुत ने हमे आपके नजरीए से अवगत कराया कि निक्सन की चीन यात्रा में सहयोग किया जाएगा और यह जनता की जनवादी लाइन के मुताबिक है, कि युएसए के उच्च दर्जे के साथ बैठक जनता के साथ जुड़ने मे मददगार होगा और अमेरिकन जनता के बीच बदलाब को प्रोत्साहित करेगा, कि निक्सन के साथ बात-चीत चाहे सफल हो या ना हो, चीन के पक्ष मे जाएगा और किसी भी तरह के बुरे अंजाम में तब्दिल नही होगा.

हमारी पार्टी के नेतृत्व नें आपके द्वारा हमारे सामने रखे गए अहम सवाल का बड़ी गम्भीरता से अध्ययन किया है. हम इस बात से सहमत हैं कि हम एक अहम मुद्दे से निपटने जा रहें हैं, वजह, जैसा कि आपने इसे परिभाषित किया है, निक्सन कि बीजिंग यात्रा आपके व्यापक रणनीतिक योजना का हिस्सा है.

हम यकीन करतें हैं कि हमारे जबाब देने में हुई देरी की वजह आप समझ रहे होंगे. इसकी वजह यह थी कि आपका फैसला हमारे लिए चौकाने वाला था और इस प्रश्न पर निर्णय हमारे बीच किसी भी प्रारंभिक परामर्श के बिना लिया गया था, ताकि हम अपनी राय को बयां करने और और सख्त आलोचना पेश कर पाने का अवसर पाते. हमारा यह सोचना है कि यह उपयोगी हो सकता था, वजह है कि करीबी दोस्तों, सम्राज्यावाद और संशोधनवाद के साथ मिलकर मुकम्मल लड़ाई लड़ने वालो लडाको के बीच शुराआती सलाह-मश्वरा उपयोगी और जरुरी है, और खासकर तब, जब हमारी राय में एसे कदम उठाएं जा रहे हो जिनका अहम अंतराष्ट्रीय असर होगा.

अमेरिकी साम्रज्यवाद के खिलाफ मौजुदा और आने वाले कल में संघर्ष के नजरिए से इस अहम सवाल पर हम अपनी राय और फैसले को मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत और रणनीति पर आधारित करते हैं. यह रणनीति, जो मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टीयों को अपराजित बनाती है, दो मोर्चे पर, अमेरिका के नेतृत्व में सम्रज्यवाद के खिलाफ और सोवियत के नेतृत्व में आधुनिक संशोधनवाद दोनो के खिलाफ, सभी तरह के प्रतिक्रियावादीयों के खिलाफ और इंकलाब और जनता के राष्ट्रीय इंकलाब के पक्ष में, साम्यवाद और समाजवाद के पक्ष में अटल, उसूली और समझौताविहिन संघर्ष से बनी है. साम्रज्यवाद और सामाजिक साम्राज्यवाद के खिलाफ साझे मोर्चे में हमारी यह रणनीति अवाम, जो संघर्षरत है, पूरे दूनीया के इंकलाबीयों के साथ करीबी गठबंधन पर विचार करती है, और कभी भी अमेरिकन साम्रज्यवाद का बहाना बना कर सोवियत समाजिक साम्रज्यवाद के साथ और सोवियत सामाजिक साम्रज्यवाद का बहाना बना कर अमेरिकी साम्रज्यवाद के साथ गठबंधन नही करती. जो कसौटी हम मार्क्सवादी-लेनिनवादीयों को बहुतेरे मार्क्सवाद विरोधीयों से अलग करती है वह है सख्त, समझौताविहीन वर्ग-संघर्ष , एक ही समय में दोनो मोर्चों पर, अमेरिकन साम्राज्यवाद और सोवियत-साम्रज्यवाद के खिलाफ इनके खात्मे के लिए तुफानी जंग.

हमारे अहम संघर्ष के क्रम में हमारी दोनो पार्टी ने बहुतेरी कार्यनीतियों को लागु किया है और करती है, लेकिन इस रणनीति की रक्षा की गई है और हमेशा इस रणनीति को बचाना होगा ... यह साफ है कि यह अहम रणनीति अमेरिकी साम्रज्यवाद और सोवियत सामाजिक-साम्रज्यवाद दोनो को डराती और भयभीत करती है, इसलिए हमारी पार्टी इसे किसी भी हालात मे इस्तेमाल करेगी और इसकी रक्षा करेगी.

इस अनुकूल इंकलाबी हालात में... पीपुल्स चीन, समाजवादी अलवानीया, अवाम और दुनीया के प्रगतिशील राज्यों को अमेरिका; सोवियत और अन्य अहम साम्राज्यवादी ताकतों के क्रुर, जंग-खोर और गुलाम बना लेने वाली योजनाओं को नाकाम करने के क्रम में अपनी कथनी और अपनी इच्छा को लागु करना होगा.

यह समझने लायक है और हमारे लिए हमेशा साफ रहा है कि अवाम और इंकलाब के भले के लिए माउत्से तुगं के चीन को दुनीया के बहुतेरे राज्यों से, जिसमे स्युंक्त राज्य अमेरिका भी शामील है, बात-चीत करनी चाहिए और कुटनीतिक रिश्ते कायम करने चाहिए.

चीनी कम्युनिष्ट पार्टी को एक सहेली पार्टी और हमारे निकटतम सह-सेनानी के तौर पर विचार करते हुए, हमने कभी भी अपने नजरिए को उनसे नही छिपाया. इसलिए इस अहम सवाल पर, जो आपने हमारे सामने रखा है, हम आपको सूचना देते हैं कि हम निक्सन के स्वागत के आपके फैसले को नाजायज और ना चाहने लायक मानते हैं, और हम इसकी मँजुरी या स्वीकृति नही देंगे. हमारी यह भी राय है कि निक्सन की घोषित चीन यात्रा का भिन्न देशों के अवाम, इकलाबीयों और कम्युनिष्टो द्वारा समझा या मँजुर नही किया गया है.

अमेरिकी साम्रज्यवाद अवाम का पहला शत्रु है. स्युंक्त राज्य अमेरिका, राष्ट्रपति निक्सन के नेतृत्व में, पुरे अवाम के साथ एक बडे कलह मे शामिल है, खास तौर से वियतनाम के अवाम के साथ, जिस पर यह एक क्रुर और बर्बर हमले को अंजाम दे रहा है पिछले 12 सालो में जिसकी कोई मिसाल नही मिलती है. आज दूनीय की अवाम ने मानवता के अहम शत्रु, अमेरिकी साम्रज्यवाद, के उत्पीड़नकारी और गुलामी लाने वाली योजना के खिलाफ जिंदगी और मौत का संघर्ष छेड़ा है. आवाम का यह सर्वोच्च हित और उनका संघर्ष हमारी दोनो पार्टी और सरकारों की नीति की बुनियाद होनी चाहिए. उन्हे सभी गतिविधियों मे इस नजरीए को शुमार करना चाहिए, खास तौर से स्युंक्त राज्य् अमेरिका और सोवियत संशोधनवादीयों के संबध में.

निक्सन कि चाहत को समझना कोई मुश्किल नही है, जो, यह जान पड़ता है, बहुत पहले से चीन जाने के लिए पुछ रहा था, क्योंकि यह अमेरिकी साम्रज्यवाद की दोहरी काँटेदार कार्यनीति, हथियार घुमाना और सन्धि-प्रस्ताव दोनो, से तालमेल रखती है, यह उसके साम्राज्यवादी खुबीयों के पर्दापोशी के, अवाम की आँखो मे धुल झोंकने और चीन को नरम करने के मकसद से तालमेल रखती है.

कम्युनिष्ट आंदोलन के इतिहास में दुशमनों के बीच बहुतेरे स्तर पर बातचीत की मिसाल रही है. ऐतिहासिक सादृश्यता कायम नही की जा सकती, वजह है वे भिन्न-भिन्न हालातों और दौर में तथा भिन्न-भिन्न सवालों को लेकर कर घटित हुएं हैं. हालाकि, हमारे महान शिक्षको ने दिखलाया है कि बात-चीत तब कायम होनी चाहिए जब वे सचमुच में जरुरी हो जाएं जब वे इंकलाब और समाजवाद की वजह

को बचाने वाले हों, कि दुशमन के हमलावार मकसद को लेकर हमारा दिमाग एकदम साफ होना चाहिए, और कि हालात और दुशमन को सही-सही आँकना चाहिए.

जो बात-चीत आप निक्सन के साथ कायम करना चाह रहें है वह प्रगतिशील तबके की राय के लिए तभी मँजुर करने लायक होगी जब, वे इस बात से पर यकीन कर सकेगे कि यह साम्रज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में, आमतौर पर इंकलाब, और चीन को खासतौर पर लाभ पहुँचा सकेगा.

ऐसी शर्त पर अमेरिकीयों के साथ ऐसी उँचे स्तर पर बात-चीत नही की जा सकती है जो कम से कम बराबरी की शर्त को भी पुरा नही करती हो, जिसका मतलब है कि युएसए को पहले पीपुल्स रिप्बलिक चीन की सरकार को एक मात्र कानुनी सरकार के बतौर मानना चाहिए जो चीनी आवाम की नुमाइंदगी करती है और युएनओ मे चीन के दाखिल होने मे बाधाओं को हटा देना चाहिए, ताइवान से अमेरिकी सेनाओं को हटा लेना चाहिए, चीनी तट से सातवे बेडे को हटा लेना चाहिए, चीन की सरहदों पर इसके हमले को रोकना चाहिए. यह अमेरिकी नीतियों की अहम हार होगी. इस के बाद, हम यकीन करतें है कि, यह मुमकिन होगा कि अहम आंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के हल की तरफ तरक्की हो सके. इन हालातो में बात-चीत की ओर कदम बढाया जा सकता है, इसके साथ इसकी कोई जरुरत नही है कि, हमारी राय में, तुरंत बहुत छोटे स्तर से एकाएक बहुत बड़े स्तर पर दो राज्यों, चीन और सयुंक्त राज्य अमेरीका, के शख्सियतों की मुलाकात हो, मात्र इसलिए क्योंकि निक्सन ने तुरंत अपनी चाहत का इजहार किया है. हमारी राय में, यह मुलाकात केवल बात-चीत में तरक्की के तौर पर नही माना जा सकता है, बल्कि एक पेचीदा तरक्की है जो अपने आजांम देगा, क्योंकि यह समझना मुश्किल है कि कैसे इस तरीके से यह तरक्की कर सकता है और अमेरिकी राष्ट्रपति की चाहत एक ऐसे वक्त में सामने आती है जब स्युंक्त राज्य इतने विशाल पैमाने पर वियतनाम पर बम गिरा रहा है और इस हमले को कमबोडीया और लाओस तक बढ़ा रहा है, जब जंग अब भी चल रहा है और अमेरिकी इंडोचीनी अवाम पर एक के बाद एक हमले उग्र तौर पर जारी रखे हुए है, जब पीपुल्स रिप्बलिक ऑफ चीन, अलवानीया, उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम के जाँबाज आवाम और सभी इंकलाबी अवाम निक्सन की सरकार, दूनीया के सभी अवाम के दुशमन, की हमलावार रणनीति के खिलाफ लड़ रहें हैं और उसका पर्दाफाश कर रहें हैं, उसी तरह से सख्ती से खड़े हैं जैसे ग्रेनाइट की चट्टान होती है. हमारी राय में, इन हालातों में यह मुलाकात उसुल और कार्यनीतिक तौर पर दोनो ही तरह से नाजायज है.

हमे लगता है कि यह दावा नहीं किया जा सकता है कि निक्सन के साथ बात-चीत, चाहे वह सफल हो या असफल, बराबर से चीन के पक्ष में जाएगा. इसके उलटे, बात-चीत के अंजाम से परे, असल मे तथ्य यह है कि निक्सन, जो उन्मादी क्मयुनिष्ट के विरोधी तौर पर, और अवाम पर हमलावार और उसके कातिल के तौर पर, अमेरिकी प्रतिक्रिया के सबसे काले पक्ष के नुमाइंदगी के तौर पर जाना जाता है, चीन

में उनके स्वागत किये जाने के कई गलत उपयोग होंगे और इंकलाबी आन्दोलन और हमारे मकसद के लिए कई नाकारात्मक अंजाम लेकर आएगा.

इसका कोई रास्ता नही है कि चीन की निक्सन यात्रा और बातचीत से आम अवाम के बीच, राष्ट्रों के अवाम के बीच, इंकलाबीयों के बीच फैलने वाले हानिकारक भ्रम के निर्माण को असफल बनाया जा सके. यह निक्सन की सरकार की नीतियों और हमलावार गतिविधी के खिलाफ खुद अमेरिकी आवाम के प्रतिरोध और संघर्ष, जो फिर से राष्ट्रपति बनने के उनके अबसर का खात्मा कर देगा, पर एक नकारत्मक असर डालेगा. चीन की निक्सन यात्रा दुनिया में हर जगह अमेरिकी साम्रज्यवाद के खिलाफ विद्रोह को कमजोर करेगी. इसलिए, हम सोंचते है अमेरिकी साम्रज्यवाद तुलनात्मक तौर पर अमन को मुकम्मल कर सकता है जिसे यह अपने हैसियत को मजबुत करने में भुनाएगा, नए सैनिक हमले के तैयारी के ताकत को जुटाएगा.

यह अनुमान लगाना मुश्किल नही हैं कि इटालियन मजदुर जो इट्ली में हाल की यात्रा में आए निक्सन की नीति और उसके के प्रति नफरत का प्रदर्शन कर रहे है, जापानी मजदुर जो आइजेनहॉर को मँजुरी नही दे रहे यहाँ तक कि उनके क्षेत्र मे उसके पाँव रखने तक का विरोध कर रहा है, और लेटिन अमेरिका की जनता जो रोकफेलर और वांशिगटन सरकार के दुसरे दुत के खिलाफ प्रदर्शन और रोष प्रकट कर रहें है, क्या सोंचते है. केवल योगोस्लाव के टीटोपंथियों और रुमानीया के संशोधनवादीयों ने राष्ट्रपति निक्सन का फूलो के साथ राजधानी मे स्वागत किया था.

निक्सन के साथ बात-चीत संशोधनवादीयों के हाथों मे सारे संघर्षों और महान बहस, जिसमे चीन की कम्युनिष्ट पार्टी सोवियत के गद्दारों का अमेरिकी साम्रज्यवाद के दोस्त होने और सहयोगी के बतौर पर्दाफाश करने में शामिल है, को मुल्य-विहीन बना देने वाला हथियार थमा देगी, उन्हे चीन के अमेरिकी साम्राज्यवाद के प्रति अपनाए गए नजरीए को सोवियत संशोधनवादीयों की इस ओर अपनाई गई धोखे और सहयोग की लाइन के बराबर रखने में सक्षम बना देगी. यह ख्रुश्चेववादी संशोधनवादीयों को साम्राज्यवाद के झुठे विरोध का और अधिक ताकत से झंडा बुलंद करने का मौका देती है और साम्राज्यवाद विरोधी ताकतों को उनके पीछे रखने के क्रम में उनकी लफ्फाजी और झुठ को और भी तेज बनाएगी. सोवियत संशोधनवादी पहले ही चीन की निक्सन यात्रा को सोवियत युनीयन के खिलाफ लक्षित चीनी-अमेरिकी गठ्बंधन के बात कह कर राष्ट्रवादी और अंधराष्ट्रवादी भावनाओं को हवा देने लगे हैं. इन सभी तरीकों से वे सत्ता में संशोधनवादी समूहों की स्थिति को मजबूत करने और चीन के क्रांतिकारी हैसियत को कमजोर करने का मकसद रखते हैं.

निक्सन की चीन यात्रा मध्यपंथी धारा की भी हौसला-अफजाई करेगी और अपने तरफदारों को अपने अवसरवादी लाईन को "सही" साबित करने के लिए तर्क का अवसर प्रदान करेगी. तोगलियाती और रूमानिया के इतालवी अनुयायी खुले तौर पर एलान कर रहे हैं कि साम्यवादी आंदोलन में एकता के फिर से कायम होने के संबंध में अब नए नजरीए खुले हैं और चीन और सोवियत संघ के बीच के मतभेद इस तरह सुलझाए जा सकते हैं. ये कट्टर संशोधनवादीयों और अवसरवादीयों की चाहते हैं जो चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत संघ के संशोधित नेतृत्व के बीच मतभेदों को पेश करने का अवसर जब्त कर चुके हैं, सिद्धांत के अहम मुद्दों पर गहरे वैचारिक मतभेद के रूप में नहीं, जैसा कि वे हकीकत में हैं, बल्कि राज्य स्तर पर एक आम असहमति के बतौर जिसे राज्य के शीर्ष व्यक्तियों के बीच सीधी बैठकों और बातचीत के जरीए सुलझाया जा सकता हैं.

अमेरिकी राष्ट्रपति की चीन यात्रा सवालों के उठने से, हकीकत में, आम लोगों के बीच गलतफहमी फैलने से, जिनके बीच शक पैदा हो सकता है कि चीन अमेरिकी साम्राज्यवाद के प्रति अपना रुख बदल रहा है और महाशक्तियों के खेल में शामिल हो रहा है, नही रोक सकती।

यह कोई इतफाक नहीं है कि पूंजीवादी और संशोधनवादी दुनीया ने इस तरह के उत्साह के साथ चीन जाने के लिए निक्सन की पहल का स्वागत किया है। एक साझे कोरस में साम्राज्यवादियों, संशोधनवादीयों, टिटोवादी, रुमानियाई और अन्य लोगों के सभी प्रचार चीन और अमेरिका के बीच रिशतो में इस नई तरक्की के लिए उनकी सराहना कर रहे हैं। सोवियत, टिटोवादी, रूमानियाई और अन्य आधुनिक संशोधनवादी ... कहते हैं कि चीन ने उसुलों को ताक पर रख कर समझौता की नीति के रास्ते की एक नई धारा अपना लिया है। वें सोचतें है कि वे इस से अहम राजनीतिक, वैचारिक और आर्थिक लाभ निकाल सकेगें।

हमारी राय में, ये सभी इंकलाबी और साम्राज्यवाद- विरोधी ताकतों की कतार में, हकीकत में मार्क्सवादी-लेनिनवादियों कतारों में भ्रम और भटकाव पैदा करने में और शांतिवादी प्रवृत्ति तथा शांतिपूर्ण राहों के बारे में भ्रमो को प्रोत्साहित करने में नकामयाब नहीं हो सकते ।

हमारी राय मे, ये अहम दुरपयोग हैं. निक्सन की बीजिंग यात्रा से जो हालात पैदा होंगे उसे कम कर के आँकना एक बड़ी गलती होगी, और हम सोचते हैं कि इन दुरपयोगों का मुआवजा निक्सन, जो साम्राज्यवादी अंडे की तरह है, चालाक है, के साथ बैठक में कुछ परिकल्पनात्मक अंजामो से नहीं अदा की जा सकती है ।

हमें अंतरराष्ट्रीय हालातो की कुछ खास समस्याओं के संबंध में अपने कुछ विचारों का इजहार करने की इजाजत दें, बेशक हमारे विचारों को कुछ सवालों पर और अधीक सटीक बनाने के मकसद से, जिनके बारे में हम सोचते हैं कि उन पर बहस किया जा सकता है, जबकि उसी वक्त हम यह स्वीकारतें है कि

अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के विकास की आपकी जानकारी, और खास तौर से संयुक्त राज्य अमेरिका की घटनाओं के बारे में, अधिक पूर्ण हो सकती है।

यह सच है कि अमेरिकी साम्राज्यवाद अब अंदर और बाहर बड़ी मुश्किलों में है। अमेरिकी लोग निक्सन और उनके पूर्ववर्तियों द्वारा व्हाइट हाउस में अपनाई जाने वाली हमलावार और अंतर्राष्ट्रीय तनाव की नीति से थके हुए होने के चिन्ह दिखा रहे हैं । वियतनाम के युद्ध का विरोध और प्रदर्शन, हाल के सालों में अश्वेतों और छात्रों के विद्रोह में इजाफा हुआ है । अमेरिकी अर्थव्यवस्था की मशीनरी हिन्दचीन युद्ध, हथियारों की होड़ और गुब्बारे की तरह फैल चुके सैन्य बजट के खर्च के भारी बोझ के नीचे चरमरा रही है। मुद्रास्फीति नहीं रुक रही है और बेरोजगारों की सेना बढ़ रही है। जबकि यूरोप के पूंजीवादी देशों के साथ अंतरविरोध बढ़ रहे हैं, अमेरिकी असर और इज्जत में लगातार कमी आ रही है। अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ अवाम का 'संघर्ष दुनिया में हर जगह बढ़ रहा है और फैल रहा है। फिर भी, दुश्मन को ज्यादा या कम आँके बिना, संयुक्त राज्य अमेरिका का सुरते हाल आज हमें उस नतीजे पर नहीं ले जाता जहाँ आप पहुंचे चुके है, अमेरिका एक महान क्रांतिकारी तूफान में फँस गया है। युद्ध के खिलाफ, जो कि वियतनाम में छेड़ा जा रहा है, संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़े लोकप्रिय विरोध तथा प्रदर्शन और जनता के अन्य आंदोलन एक तथ्य हैं, लेकिन उनका विरोध केवल एक दी गई गतिविधि तक, अमेरिकी सरकार की एक ठोस गतिविधी तक सीमित है, और केवल अप्रत्यक्ष रूप से ही उसकी पूरी हमलावार लाईन को प्रभावित करती है । वे इस सीमा के परे नही जाते. उनकी आर्थिक हालात, विचारधारा जो उन्हें प्रेरणा देती है, उनकी जीवन-शैली, रीति-रिवाजों, परंपराओं, जुड़ाव इत्यादि, के संदर्भ में अमेरिकी अवाम क्रांति की मुहाने पर खड़ी नहीं हैं। उस समय के आने तक अमेरिकी नदियों के ऊपर बने पुल के नीचे बहुत पानी बहेगा. हमे यकीन हैं कि ऐसा होगा, लेकिन इस के लिए बहुत अधिक काम करना और एक महान संघर्ष चलाना होगा .

पश्चिमी यूरोप में जनता के आंदोलन, जिनकी एक लंबी परंपरा हैं, संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में बहुत व्यापक और ताकतवर हैं। इसकी संपूर्ण राजनीतिक प्रवृत्ति और वर्ग के चरित्र स्पष्ट हैं। फिर भी, यहां भी, यह नहीं कहा जा सकता कि इंकलाबी तूफान चल रहा है और इंकलाब निकट है। दूसरे तरीके से आँकने का मतलब होता है हानिकारक भ्रम पैदा करना और इंकलाबी ताकतें आसानी से चरमपंथी गलतीयों में पड़ सकते हैं, खासकर अति-वामपंथी गलतीयों में.

इसी तरह, हम यह सोचते हैं कि आपका आकलन कि, उन हारों के अंजामों के बतौर , जो उन्हे झेलने पडे है, अमेरिकी तनावग्रस्त हालातों को कम करने, विदेशी जमीनो से अपने सैनिकों और सैन्य ठिकानों को वापस लेने, जंग में और जंग के दूसरे बड़े केन्द्र बनाने में शामिल होने से बचना चहते हैं, सही नहीं है । आँकने का यह तरीका ऐसा असर पैदा करती है जैसे कि आज सभी मोर्चों पर अमेरिकी साम्राज्यवाद की एक आम हार हुई है, एक चीज जो केवल हानिकारक भ्रम पैदा करती है और साम्राज्यवाद विरोधी ताकतों को विघटन की ओर ले जाती है .

अमेरिकी साम्राज्यवाद में अभी भी विरोध और नए हमले को अपनाने की विशाल आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य ताकत है। युद्ध बजट और हथियारों की होड़ और सटीक हथियारों के लिए दौड़, जो जंगखोर और हमलावार नीति और लक्ष्य के मुख्य संकेतक हैं, कम नहीं हुए हैं, बल्कि इसके विपरीत, बहुत तेज दर से साल-दर-साल बढ़ रहे हैं अमेरिकी साम्राज्यवाद युद्ध और आक्रामकता के अपने रणनीतिक मकसद को कभी नहीं छोड़ेगा। नही तो यह साम्राज्यवाद नहीं होगा।

अगर अमरीका सोचता है कि केवल कठपुतली सरकार ही लोगों से अकेले लड़ सकती है और अमेरिका उन्हें केवल धन और हथियारों के साथ ही सहायता करेगा, इसका मतलब है कि अमेरिकी साम्राज्यवाद अपने कठपुतलियों और ख़ुद के लिए मौत की वारंट पर हस्ताक्षर करेगा। इस दिशा में कोई गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। हालांकि यह हार का शिकार हूआ है और कुछ देशों से वापस जाने के लिए बाध्य हूआ है, इसका मतलब यह नहीं है कि अमेरिकी साम्राज्यवाद अन्य देशों के खिलाफ दखल देने और हमले का आयोजन करने की कोशीश नहीं करेगा.

आवम पर युद्ध, आक्रामकता, उत्पीड़न और दासता को लादना साम्राज्यवाद की प्रकृति में हैं. ये इस शोषण प्रणाली के के सच्चे सार हैं. यह जानी हूई बात है कि वजूद में बने रहने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका को आवाम को जंजीरों में कैद रखने और उनका लहु चूसने के मकसद से लगातार आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य विस्तार की आवश्यकता है. -नही तो साम्राज्यवाद मर जाता और विद्रोह, वगाबत और इंकलाब के लिए रास्ता खोल दिया जाता. इस सब वजहों से, हम यह मानते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका विदेशी क्षेत्रों में अपने सैन्य ठिकानों को कभी खत्म नहीं करेगा और अपने खुद के समझौते के तहत विदेशों में तैनात सैनिकों को वापस नहीं लेगा. यह तब हासिल होगा जब आवाम के संघर्ष से इसे ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाएगा.

हमारी राय में, मार्क्सवादी-लेनिनवादियों और क्रांतिकारियों का कार्य साम्राज्यवाद और संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष में आवम को अपने खुद की अटुट ताकत पर अपना भरोसा कायम रखने के लिए जागरूक करना है, ताकि वे जागरूक हो सकें कि आज वे साम्राज्यवादियों, पुरानी और नई, के हमलों का कामयाबी से विरोध करने के काबिल हैं और उनकी हमलावार योजनाओं को हरा सकते हैं...

ताइवान को आजाद करने के लिए चीन की पीपुल्स रिपब्लिक के निर्विवाद अधिकार का हम हमने समर्थन किया है और अपनी पुरी ताकत से समर्थन करेंगे। ताइवान पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का एक अविभाज्य और अंखण्ड हिस्सा है। हमारी सरकार हमेशा "दो चीन", "एक चीन और एक ताइवान", ताइवान की "आजादी" या ताइवान की स्थिति के "अनिश्चितता" के सिद्धांत का सख्ती से विरोध करेगी। अब तक, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ अल्बानिया यह सुनिश्चित करने के लिए संघर्ष करेगा कि पीपुल्स चाइना संयुक्त राष्ट्र में उस स्थान पर रहे जो उसका है और चियांग काई शेक जैसे हड़पने बालो को इसे से निकाल दिया जाए ।

पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चीन ने जो मदद वियतनामी अवाम और अमेरिकी हमले के खिलाफ लड़े जा रहे उनके वीरतापूर्ण युध को सीधे तौर पर दी है और अंतराष्ट्रीय क्षेत्र में अपने मकसद के लिए दी जा रही मदद की दुनिया के सभी लोगो की तरह ही हमारे लोगो ने तारीफ की है .....

वियतनाम के संदर्भ मे जंग पर हमारा नजरीया अपको पहले से ही पता है. हमने पेरीस वार्ता का विरोध किया था और करते आ रहें हैं. यह हमने वियतनामी कॉमरेड को खुले तौर पर कहा है. इसके बावजूद, हमने समर्थन किया है और वियतनाम के लोगों के इस न्यायपूर्ण संघर्ष का खुल कर समर्थन किया है और और हम मानते हैं कि उनकी जीत पूरे आवाम के साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के लिए निर्णायक है.

वियतनाम और पूरे इंडोचीन में अमेरिकी आक्रमण का जारी रहना एक बड़ा मुद्दा है जो सभी लोगों से सारोकार रखता है. वियतनाम की समस्या का हल तब ही मुमकिन है जब संयुक्त राज्य अमेरिका वियतनाम में युद्ध को खत्म कर डालता है, अपने सभी सैन्य ठिकानों को ध्वस्त कर देता है और उस देश से अपने आखिरी सैनिक को वापस ले जाता है. हमे यकीन हैं कि वियतनामी लोग विजयी होंगे और यह जीत वियतनामी खुद से पाएंगे जो हाथों में हथियार लेकर लड़ रहे हैं और अपना खून बहा रहे हैं. वियतनाम की समस्या का किसी भी हल पर आखिरी शब्द खुद वियतनामीयों का ही हो सकता है, उनको अपनी किस्मत तय करने का निर्विवाद हक है.

अमेरिकी साम्राज्यवादियों और उनके अधीनस्थ और साथ ही साथ सोवियत संशोधनवादीयों ने चीन के साथ लगी सीमा पर तैनात अपने सशस्त्र बलों से चीन के चारों ओर आग की अंगूठी बनाने का प्रबंध किया है और इसकी स्वतंत्रता और आजादी को खतरे मे डालने की कोशिश की है. इस दिशा में सोवियत संशोधनवादियों और प्रतिक्रियावादी *सतो* सरकार के बीच विकसित हो रही दोस्ती अहम है. अमेरिकी साम्राज्यवाद, सोवियत संशोधनों और विभिन्न प्रतिक्रियावादी लोगों की इन शत्रुतापूर्ण योजनाओं का विरोध करने और नष्ट करने के लिए पाक संघर्ष में हम हमेशा आपके साथ रहे हैं और आपके साथ हैं.

हम पूरी तरह से आपके स्टैंड को स्वीकृति देते हैं कि सोवियत संघ के बारे में चीन के विचारों को किसिंजर के सामने व्यक्त नहीं किया गया था. हालांकि, हमें लगता है कि हमारे बीच, मौजूदा हालातों में, चीन और अलबानिया के खिलाफ, कम से कम सोवियत संशोधानवादियों द्वारा किए जाने वाले राजनीतिक कार्यों के बारे में आम राय होनी चाहिए.

सोवियत संघ के बारे में अमरीकी साम्राज्यवादियों ने जो विचार आपको किसिंजर ने व्यक्त किया है, हमसे उसे गुप्त नही रखा जाना चाहिए. यह जानकर कि अमेरिकी साम्राज्यवाद सोवियत सामाजिक-साम्राज्यवाद के साथ संबद्ध है और यह कि वे अपने कार्यों को समन्वय कर रहे हैं, हमें लगता है कि ये विचार केवल सुदूर पूर्व को ही प्रभावित नहीं करते, बल्कि यूरोप को भी प्रभावित करतें हैं. किसिंजर ने जो सोवियत संघ के बारे में कहा था यदि आप ने हमें सूचित किया होता, तो हम यूरोप के शतरंज की बिसात पर अमेरिकी और सोवियत चाल को और अधिक अच्छी तरह से खोजने के लिए पूरी तरह से सशस्त्र होंते.

हम उस संघर्ष का समर्थन करते हैं जो चीन की पीपुल्स रिपब्लिक ने एशिया में, विशेष रूप से कोरिया, ताइवान, आदि की दिशा में जापानी सैन्यवाद और इसके विस्तारवादी नीति के खिलाफ छेड़ रखा है. इसके साथ चीन जो प्रतिक्रियावादी *साातो* सरकार और जापान-अमेरिकी गठबंधन के खिलाफ जापानी लोगों के संघर्ष का सक्रिय समर्थन देता है, जापान में इंकलाबी संघर्ष का निर्माण करने के लिए यह सही स्टैंड एक अहम योगदान है, जो खास तौर से अमेरिकी साम्राज्यवाद और जापानी सैन्यवाद की हमलावार योजनाओं पर लगाम लगाने के लिए अहम है.

अमेरिकी साम्राज्यवाद और सोवियत सामाजिक-साम्राज्यवाद ने जापानी सैन्यवाद, भारतीय प्रतिक्रिया, कई अन्य देशों को चीन और एशिया के आजाद देशों के खिलाफ भड़काने की कोशीशों को आगे बढ़ाया है. इस संदर्भ में, हम उन प्रयासों की सराहना करते हैं जो पीपुल्स चीन ने चीन, कोरिया, वियतनाम, कंबोडिया और लाओस के लोगों के संयुक्त मोर्चे को ताकतवर बनाने के साथ-साथ इसे मजबूत करने और विस्तार देने की कोशीशों के तहत जापानी, भारतीय, पाकिस्तानी और अन्य लोगों से संपर्क किया है और इसे जोड़ा है.

हमें लगता है कि अमेरिका में हड़ताल और प्रदर्शन अहम हैं, लेकिन इससे अधिक अहम भारत, जापान और सभी एशिया के लोगों का जागरण है, और ये कि वे खुद को इंकलाब में झोंक रहे हैं ... इसी तरह, विश्व क्रांति के लिए चीन, भारत और पूर्व के अन्य बड़े देशों में इंकलाब की जीत को जो अहम महत्व दिया है लेनिन ने दिया है, वह जानी-मानी हुई बात है.

ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने भारत और पाकिस्तान के लोगों के बीच फूट और दुशमनी पैदा कर दी है और हम मार्क्सवादी-लेनिनवादियों को अमेरिकी साम्राज्यवादियों और सोवियत साम्राज्यवादियों के शोषण और आक्रामक लक्ष्यों का विरोध करना चाहिए जो एक दूसरे के खिलाफ इन दो देशों के लोगों को उकसाते रहते हैं. भारत और पाकिस्तान पर प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ शासन है जो कि कहीं से भी अमेरिकी साम्राज्यवाद की तरह ताकतवर नहीं है. वे एक जंजीर की कमजोर कड़ी का निर्माण करते हैं.

एक पल के लिए भी कभी भी हमारी दोनो पार्टियां नहीं भूलती हैं कि अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष को न केवल एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका बल्कि यूरोप में भी कड़े तौर पर छेड़ा जाना चाहिए. हमने ध्यान दिलाया है कि पीपुल्स चाइना को, अपने सच्चे मार्क्सवादी-लेनिनवादी मित्रों के साथ, यूरोप में एक बड़ी भूमिका निभानी चाहिए. आप यूरोप के संबंध में हमारी नीति जानते हैं, एक नीति जो इंकलाब के लिए है, नाटो और वारसा संधि के खिलाफ, नई सोवियत-पश्चिम-जर्मन संधि के खिलाफ और यूरोपीय सुरक्षा पर संशोधनवादी योजनाओं के खिलाफ है. हमें लगता है कि यूरोप में अमेरिकी साम्राज्यवाद की नीति बहुत ही पेंचिदा है. संयुक्त राज्य अमेरिका के अपने सहयोगियों के साथ अंन्तर्विरोधो के बावजूद, ब्रिटेन और फ्रांस के साथ इसके पारंपरिक संबंधों को हमेशा ध्यान में रखा जाना चाहिए.

हम आपके साथ सहमत हैं कि लोगों के साथ संपर्क कायम करने के लिए जनवाद की कूटनीति को लागू किया जाना चाहिए. यह खुली और गंभीर कूटनीति है जो समाजवाद पर केंद्रित है, लोगों की आजादी और पूंजीवादी देशों में जनता के इंकलाबी वृद्धि के विस्तार और तरक्की के लिए काम करती है.

हालांकि, जैसे कूटनीतिक संबंध ही लोगों के साथ संबंध कायम करने का एकमात्र तरीका नहीं है, उसी तरह से लोगों के साथ संपर्क जरूरी नहीं कि प्रमुखों के साथ बैठकों के माध्यम से ही कायम हो. समाजवादी देशों का प्रभाव सबसे पहले जिस नीति के तहत आगे बढ़ता हैं, वह है साम्राज्यवाद विरोधी और संशोधनवादी विरोधी छेड़ा गया संघर्ष, दुनिया को घेरे हुएं जिन्दा महत्वपूर्ण समस्याओं के प्रति लगातार, सुसंगत सैद्धांतिक नजरीया और वो एकजुटता और सच्चा समर्थन जो वे आवाम के इंकलाबी और अवाम की आजादी के जंग को देते हैं.

अभी हाल तक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना ने कई पूंजीवादी देशों के साथ कूटनीतिक संबंध और सीधा संपर्क नहीं किया है, लेकिन इसने दुनिया में इंकलाबी और आजादी के आंदोलन पर एक बड़ा असर डालने से इसे रोका नहीं है, जैसा कि उसने विभिन्न महाद्वीपों के लोगों को चीन की प्रशंसा, समर्थन और बचाव से नहीं रोका है... वियतनाम का ना केवल संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ कूटनीतिक संबंध नहीं हैं, बल्कि यह एक बहुत लंबे समय से इसके साथ युद्ध में है. फिर भी, इसकी न्यायपूर्ण जंग की वजह से, सटीक तौर पर आज के दिन दुनिया के लोगों और वियतनाम के लोगों के लिए अमेरिकी लोगों की सहानुभूति पहले से कहीं अधिक है. वियतनाम का वीर और साहसपूर्ण पहलू एक कारक है, जो किसी भी अन्य चीज पर भारी है, अमेरिकी लोगों को जों वियतनाम के राष्ट्रीय झंडे और हो ची मिन्ह के चित्रों के साथ सड़कों पर ले आता हैं.

अधिक से अधिक जो पूंजीवादी देशों के प्रमुखों के साथ बैठक और बातचीत में हासिल किया जा सकता है वह है कुछ निश्चित समस्याओं का निपटारा. हालांकि वे कभी भी एक ऐसे कारक के प्रभाव के रुप में नहीं आ सकते हैं जो अवाम के इंकलावी उभार को बढ़ाते हों, खासकर जब जनता असंतुष्ट हो और अपने शासकों के नीतियों और उनके कार्यों के खिलाफ सक्रिय हो चुकी हो. इसके विपरीत, ऐसे मामलों में साम्राज्यवादी या संशोधनवादी प्रमुखों से बैठकों और वार्ताएं से उनके बारे में अवाम के बीच भ्रम पैदा हो सकता है, जनता के बीच इंतजार की फितरत पैदा हो सकती है और जनता के संघर्ष के स्तर को कम कर सकता है.

इसके अलावा, कुट्नीतिक रिशतों का कायम होना हमेशा इस संघर्ष के लिए उपयोगी नहीं होता है: मिसाल के लिए, हम सोवियत संशोधनवादीयों के साथ फिर से कुटनीतिक रिशतो को कायम करने को मंजुर नहीं करते क्योंकि उन्हें पता है, उन्होंने अहम अपराध किया हैं और मार्क्सवाद-लेनिनवाद, खास तौर से पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ अल्बानिया के खिलाफ उग्र हमलों की शुराआत की है, और अपनी खुद की पहल पर हमारे साथ कुट्नीतिक संबंध तोड़ दिया है. हमारी पार्टी ने मांग की है कि वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद और हमारे देश के खिलाफ किए गए हर चीज की सार्वजनिक आत्म-आलोचना करें. यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो ऐसा लगेगा कि जैसे हम संबंधों के उल्लंघन के लिए कम से कम कुछ हद तक अपने दोष को मानते हैं

और हम सोवियत संशोधनवादी प्रमुखों को उनके औपचारिक तौर पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद और अल्बानिया के खिलाफ शत्रुतापूर्ण नजरीए और कार्यों को सोवियत आवाम की आंखों में जायज ठहराने का तर्क दे देंगे. यह सोवियत लोगों और उनके संशोधनवादी विरोधी संघर्ष के पक्ष में नहीं होगा, बल्कि यह ब्रेज़नेव की हैसियत को मजबूत करने में मदद करेगा.

या, चलीये यूगोस्लाविया के साथ हमारे संबंधों के मामले पर विचार करें. दोनों देशों के बीच कूटनीतिक और व्यापारिक संबंध तथा कुछ सांस्कृतिक आदान-प्रदान मौजूद हैं. और ये रिश्ते ना केवल टीटोवादी प्रमुखों के साथ संपर्क किए बिना ही वजूद में है, बल्कि हकीकत में उनके खिलाफ सैद्धांतिक विचारधारात्मक संघर्ष के साथ है. टिटोवाद के साथ बहस और विचारधारात्मक संघर्ष, जो सामग्री और दस्तावेजों में पूरी तरह और सभी पक्षो के साथ प्रतिबिंबित होती है, जो हमारी पार्टी लगातार प्रकाशित करती रहती है, बिना किसी रुकावट के चलती है. हालांकि, तथ्य यह है कि अब सोवियत सामाजिक-साम्राज्यवाद द्वारा यूगोस्लाविया को दी गई धमकी, हमें यह कहने से नही रोक सकी की हमले के मामले में हम यूगोस्लाविया के लोगों के साथ खड़े होंगे. इस प्रकार हमने यूगोस्लाविया के लोगों के साथ अपने संपर्कों को मजबूत किया है ...

हमेशा सिद्धांतों की और हमारे समाजवादी राज्य के सम्मान की रक्षा करते हुए हमें अनुकूल परिस्थितियों का उपयोग करना चाहिए, जो कि हमारे दुश्मनों की इच्छा से नहीं बल्कि हमारे सही लाइन और दृढ़ संघर्ष से, हमारे पक्ष में और क्रांति के पक्ष में, बनती है ...

हमारी तरफ से हम आपको यकीन दिलाना चाहते हैं कि पार्टी ऑफ लेबर ऑफ अल्बानिया की लाइन हमेशा बिना किसी तब्दिली के सिधांतपूर्ण और सुसंगत बनी रहेगी. हम अमेरिकी साम्राज्यवाद और सोवियत संशोधनवाद से लड़ेंगे, जो समझौताविहीन और सुसंगत होगा. संभावित रूप से यें दुश्मन, व्यक्तिगत रूप से या एक साथ, या उनके सहयोगियों और कमियों को उकसाने के द्वारा, हमारे खिलाफ आक्रामक कारनामों का संचालन करेंगे. हम जीतने के लिए उन्हें खत्म करने के लिए बिना किसी झिझक के लड़ेंगे ...

पीएलए की केंद्रीय समिति के लिए
प्रथम सचिव अनवर हूजा
1 एक सिद्ध तथ्य बनाया
सीपीए में मूल रुप से पहली बार प्रकाशित अनवर हुजा, चयनित वर्क्स, वॉल्यूम चतुर्थ, द "8 नॉटोरी"
पब्लिशिंग हाउस, तिराना, 1982

रेवोलुशनरी डेमोक्रेसी अप्रैल २००६ में अंग्रेजी में प्रकाशित

कुन्दन केडी द्वारा हिन्दी में अनुवादीत